

## विनय चालीसा - नीम करौली बाबा

॥ दोहा ॥

मैं हूँ बुद्धि मलीन अति ।

श्रद्धा भक्ति विहीन ॥

करूँ विनय कछु आपकी ।

हो सब ही विधि दीन ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय नीम करोली बाबा ।

कृपा करहु आवै सद्भावा ॥

कैसे मैं तव स्तुति बखानू ।

नाम ग्राम कछु मैं नहीं जानूं ॥

जापे कृपा द्विष्टि तुम करहु ।

रोग शोक दुःख दारिद हरहु ॥

तुम्हरौ रूप लोग नहीं जानै ।

जापै कृपा करहु सोई भानै ॥4॥

करि दे अर्पन सब तन मन धन ।

पावै सुख अलौकिक सोई जन ॥

दरस परस प्रभु जो तव करई ।

सुख सम्पति तिनके घर भरई ॥

जय जय संत भक्त सुखदायक ।  
 रिद्धि सिद्धि सब सम्पति दायक ॥

तुम ही विष्णु राम श्री कृष्णा ।  
 विचरत पूर्ण कारन हित तृष्णा ॥8॥

जय जय जय जय श्री भगवंता ।  
 तुम हो साक्षात् हनुमंता ॥

कही विभीषण ने जो बानी ।  
 परम सत्य करि अब मैं मानी ॥

बिनु हरि कृपा मिलहि नहीं संता ।  
 सो करि कृपा करहि दुःख अंता ॥

सोई भरोस मेरे उर आयो ।  
 जा दिन प्रभु दर्शन मैं पायो ॥12॥

जो सुमिरै तुमको उर माहि ।  
 ताकि विपति नष्ट हवै जाहि ॥

जय जय जय गुरुदेव हमारे ।  
 सबहि भाँति हम भये तिहारे ॥

हम पर कृपा शीघ्र अब करहु ।  
 परम शांति दे दुःख सब हरहु ॥

रोक शोक दुःख सब मिट जावै ।  
 जपै राम रामहि को ध्यावै ॥16॥

जा विधि होई परम कल्याणा ।  
 सोई सोई आप देहु वरदाना ॥

सबहि भाँति हरि ही को पूजे ।  
 राग द्वेष द्वंदन सो जूँझे ॥

करै सदा संतन की सेवा ।  
 तुम सब विधि सब लायक देवा ॥

सब कुछ दे हमको निस्तारो ।  
 भवसागर से पार उतारो ॥20॥

मैं प्रभु शरण तिहारी आयो ।  
 सब पुण्यन को फल है पायो ॥

जय जय जय गुरुदेव तुम्हारी ।  
 बार बार जाऊं बलिहारी ॥

सर्वत्र सदा घर घर की जानो ।

रुखों सूखों ही नित खानो ॥

भेष वस्त्र है सादा ऐसे ।

जाने नहीं कोउ साधू जैसे ॥24॥

ऐसी है प्रभु रहनी तुम्हारी ।

वाणी कहो रहस्यमय भारी ॥

नास्तिक हूँ आस्तिक हवै जावै ।

जब स्वामी चेटक दिखलावै ॥

सब ही धर्मन के अनुयायी ।

तुम्हे मनावै शीश झुकाई ॥

नहीं कोउ स्वारथ नहीं कोउ इच्छा ।

वितरण कर देउ भक्तन भिक्षा ॥28॥

केही विधि प्रभु मैं तुम्हे मनाऊँ ।

जासो कृपा-प्रसाद तव पाऊँ ॥

साधु सुजन के तुम रखवारे ।

भक्तन के हो सदा सहारे ॥

दुष्टक शरण आनी जब परई ।

पूरण इच्छा उनकी करई ॥

यह संतन करि सहज सुभाऊ ।  
 सुनी आश्चर्य करई जनि काऊ ॥32॥

ऐसी करहु आप अब दाया ।  
 निर्मल होई जाइ मन और काया ॥

धर्म कर्म में रुचि होई जावे ।  
 जो जन नित तव स्तुति गावै ॥

आवे सद्गुन तापे भारी ।  
 सुख सम्पति सोई पावे सारी ॥

होय तासु सब पूर्न कामा ।  
 अंत समय पावै विश्रामा ॥36॥

चारि पदारथ है जग माहि ।  
 तव कृपा प्रसाद कछु दुर्लभ नाही ॥

त्राहि त्राहि मैं शरण तिहारी ।  
 हरहु सकल मम विपदा भारी ॥

धन्य धन्य बड़ भाग्य हमारो ।  
 पावै दरस परस तव न्यारो ॥

कर्महीन अरु बुद्धि विहीना ।  
तव प्रसाद कछु वर्णन कीन्हा ॥40॥

॥ दोहा ॥

श्रद्धा के यह पुष्प कछु ।  
चरणन धरी सम्हार ॥  
कृपासिन्धु गुरुदेव प्रभु ।  
करी लीजै स्वीकार ॥